Mind and Society ISSN 2277-6907
Vol 09, No. III&IV,Sep. & Dec.2020, Page No. 39 to 43

# भतरा जनजाति में जन्म संस्कार का मानवशास्त्रीय अध्ययन

*आंनद मुर्ति मिश्रा,
**प्रीति मिश्रा,
***शारदा देवांगन

| Received | Reviewed | Accepted |
|---|---|---|
| 15 Nov. 2020 | 21 Nov. 2020 | 30 Nov. 2020 |

*संस्कार शब्द का अर्थ है शुद्धिकरण। जीवात्मा जब एक शरीर को त्याग कर दुसरे शरीर में जन्म लेता है तो उसके पुर्व जन्म के प्रभाव उसके साथ जाते हैं। संस्कारो के दो रूप होते हैं – एक आंतरिक रूप और दूसरा बाह्य रूप। बाह्य रूप का नाम रीतिरिवाज है जो आंतरिक रूप की रक्षा करता है। संस्कार का अभिप्राय उन धार्मिक कृत्यों से है जो किसी व्यक्ति को अपने समुदाय का पुर्ण रूप से योग्य सदस्य बनाने के उददेश्य से उसके शरीर मन मस्तिष्क को पवित्र करने के लिए किए जाते है।*

*सभी समाज के अपने विशेष रीतिविाज होते है, जिसके कारण इनकी अपनी विशेष पहचान है, किंतु वर्तमान के आधुनिक युग से कोई भी समाज अछुता नहीं है जिसके कारण उनके रीतिरिवाजों के मुल स्वरूप में कहीं न कहीं परिवर्तन अवश्य हुआ है। वर्तमान अध्ययन का उददेश्य भतरा जनजाति के जन्म संस्कार का वृहद अध्ययन करना है। वर्तमान अध्ययन के लिए बस्तर जिले के 4 ग्रामों का चयन कर दैव निर्दशन विधि के माध्यम से प्रतिष्ठित व्यतियों का चयन कर समुह चर्चा के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि भतरा जनजाति अपने संस्कारों के प्रति अति संवेदनशील है किंतु उनके रीतिरिवाजों में आधुनिकीकरण का प्रभाव होने लगा है। भतरा जनजाति को चाहिए की आने वाली पीढ़ी को अपने संस्कारों के महत्व को समझाने का प्रयास करें ।*

संस्कार शब्द का अर्थ है शुद्धिकरण है। जीवात्मा जब एक शरीर को त्याग कर दूसरे शरीर में जन्म लेता है तो उसके पुर्व जन्म के प्रभाव उसके साथ जाते हैं। इन प्रभावों का वाहक सुक्ष्म शरीर होता है जो जीवात्मा के साथ एक स्थुल शरीर से दूसरे शरीर में जाता है। संस्कारो के दो रूप होते हैं – एक आंतरिक रूप और दूसरा बाह्य रूप बाह्य रूप का नाम रीतिरिवाज है जो आंतरिक रूप की रक्षा करता है। कोष ग्रंथो में संस्कृत शब्द का अर्थ भी संस्कार शब्द से मिलता जुलता है इसका अर्थ शुद्ध किया हुआ परिमार्जित, परिष्किृत, सुधारा हुआ, संवारा हुआ है। इसमें मानव के भीतर के दोष को शोधन करने के लिए उन्हें सुस्कृत करने के लिए संस्कारो का प्रावधान किया गया है।

**संस्कार** :

मानव की संस्कृति ही संस्कारो को जन्म देती है मनुष्य जिस समाज में जन्म लेता है उसकी अपनी विशेष संस्कृति होती है जिसके अनुरूप ही मनुष्य विभिन्न संस्कारो का

* *सहायक प्राध्यापक, मानवविज्ञान एवं जनजाति अध्ययन, बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर (छ.ग.)*
** *प्राध्यापक, समाज शास्त्र विभाग, शासकीय छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)*
*** *पी.एच.डी. शोध छात्रमानवविज्ञान एवं जनजाति अध्ययन, बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर (छ.ग.)*

निर्वहन करता है। जनजीवन की आधारशिला उनकी परम्पराएं है। समाज– संस्कृति का नियमन भी वहीं से होता है। अनुशासन और मानवीय संबंध उसकी छत्रछाया में ही पुष्पित और पल्लवित होते है। जनजातियों के विशेष संदर्भ में अध्ययन की सुविधा के लिए, इन्हें विभिन्न शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है। संस्कृति का सीधा सादा अर्थ है परिष्कार या संस्कार । वस्तुतः परिमार्जित संस्कार ही संस्कृति है इसके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ. रामखेलावन पाडेण्य ने लिखा है कि ''संस्कृत शब्द का प्रयोग अपेक्षाकृत अर्वाचीन है और अंग्रजी कल्चर का समनार्थसुचक है। इसके संबंध की मान्यताओं में पर्याप्त मतभेद और विरोध है। इसकी सीमाएं एक ओर धर्म को स्पर्श करती हैं तो दूसरी ओर साहित्य को अपने बाहूपाश में आबद्ध करती हैं। संस्कृति भौतिक साधनों के संचयन के साथ ही आध्यत्मिकता की गरिमा से मंडित होती है। वेश–भूषा, पंरपरा, पूजा–विधान और सामाजिक रीति–रिवाज की विवेचना भी संस्कृति के अंर्तगत होती है।[1]

**संस्कार का अर्थः**

धर्मशास्त्रों में संस्कारों का अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप का वर्णन किया गया है। प्रकृति से उत्पन्न होने वाली वस्तु प्राकृत कहलाती है। '' गुणदोषमय सर्वस्रष्टा स्रजति कौतुकी'' के अनुसार सर्वत्र गुण–दोषों का सम्मिश्रण देखा जाता है। व्यक्ति को परिष्कृत करने के लिए जो विधि अपनाई जाती है, उसे ही संक्षेप में संस्कार कहते है।

संस्कार शब्द सम्+कृ+घञ् करने पर बनता है। संस्कार– पूर्ण करना, संस्कृत करना, प्रयुक्त करना संस्कार कहलाता है।

संस्कार शब्द का शाब्दिक अर्थ है– दोष दूर करके शुद्ध तथा उन्नत रूप देना, परिमार्जन, उपाय, पूर्वजन्म, शिक्षा, संस्कृति आदि के प्रभाव से मन या आत्मा पर पड़ी हुयी छाप को शुद्ध किया जाता है। आर्य जाति में वे कृत्य या विधान संस्कार कहलाते हैं जो जन्म से मृत्यु पर्यन्त द्विज वर्णो में आवश्यक माने गये हैं। इन कृत्यों को किये जाने से आत्मा की शुद्धि होती है।

**महत्व :**

संस्कारो का महत्व वैदिक काल से चला आ रहा है। मानव–जीवन को परिष्कृत करने हेतु इन संस्कारो की आवश्यकता पड़ी जीवन की सार्थकता केवल बाह्य–सौन्दर्य तक ही सीमित नहीं है अपितु वह अभयन्तर तत्व के रूप में मानस पटल पर अंकित होकर संपूर्ण जीवन को अभिलक्षित करके संस्कारों का रूप ग्रहण करती है।

यह संस्कार मुख्य रूप से सोलह माने गये हैं। वर्तमान युग में सांसारिक निकटता ने जीवन को दूसरे रूप में प्रभावित कर इन संस्कारों की महत्ता को कुछ कम अवश्य कर दिया है तथापि वर्तमान समय में भी इनकी जड़ें सुदृढ़ तथा दुर तक फैली हुई हैं। समय–समय पर धर्माचार्यो ने समाज को पथभ्रष्ट होता देखकर उसे दीक्षित करके संस्कारों की महत्ता प्रदर्शित की है।

**साहित्य का पुर्नावलोकन :**

प्रो. उर्मिला पोरवल सेठिया (बैंगलोर) के द्वारा भारत की अनेकोनेक मान्यताओं एवं विशेषताओं में जो सर्वोपरी है वे है– संस्कार, संस्कृति और सभ्यता । सामान्यतया इन्हें पर्याय समझा जाता है लेकिन वास्तव में ये तीनो एक ही मार्ग के अलग–अलग पड़ाव है, जिनका अपना एक अलग महत्व और अस्तित्व है–मानव केवल शरीरमात्र नहीं हैं। वे तीन स्तरों पर जीते हैं और व्यवहार करते हैं– भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक यही क्रमशःसभ्यता, संस्कृति और संस्कार कहलाते हैं।[2]

दास 1961 के अनुसार एक गर्भवती महिला को उसकी अच्छी देखभाल व सुरक्षित प्रसव हेतु उसके आहार एवं दैनिक गतिविधियों के संबंध में कई वर्जनाओं (प्रतिबंधों ) के अधीन किया जाता है। जबकि आदिवासी समुदायों की गर्भवती महिलाये आमतौर पर बच्चे के जन्म के दिन तक काम करती है।[3]

साहू और पांडा 2005 ने ओडिशा के बालासोर जिले में अध्ययन करते हुए पाया कि कुछ गर्भावस्था के दौरान खाद्य पदार्थो में प्रतिबंध है सामान्य अवधारणा यह थी कि प्रतिबंधित भोजन वस्तुओं से माँ को सर्दी और खांसी होती है या गर्भपात हो सकता है।[4]

प्रेमी 2015 ने अपने अध्ययन में पाया कि मंझवार जनजाति में जन्म संस्कार से संबंधित प्रक्रियाएं बच्चे के गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाती है और जो कि बच्चे के जन्म के एक दो महीने तक चलती रहती है। जन्म संस्कार में धार्मिक क्रियाओं का संबंध शिशु को सभी प्रकार की प्राकृतिक तथा अप्राकृतिक शक्तियों जैसे – बुरी आत्मा, बुरी नजर, देवताओं का प्रकोप टोना–टोटका आदि से बचाव हेतु किया जाता है।[5]

**उददेश्य :**

वर्तमान अध्ययन का उददेश्य भतरा जनजाति के जन्म संस्कार का वृहद अध्ययन करना है।

**शोध प्रविधि :**

प्रस्तुत शोध में तथ्यों का संग्रह करने के लिए बस्तर जिले के 4 ग्रामों नगरनार, टलनार, छोटे देवड़ा और माडपाल का चयन कर दैव निर्दशन विधि के माध्यम से प्रतिष्ठित व्यतियों का चयन कर समुह चर्चा के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

**उपकरण एवं प्रविधि :**

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसुची ,समुह चर्चा अध्ययन प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

**साक्षात्कार :** सामग्री को संकलित करने में साक्षात्कार एक प्रत्यक्ष स्त्रोत है। इसके अंतर्गत अनुसंधान अध्ययन विषय से संबंधित व्यक्तियों से प्रत्यक्ष संपर्क करता है और विभिन्न पक्षों पर वार्तालाप करता है। इसमें साक्षात्कारकर्ता स्थान और परिस्थिति दोनो की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए उत्तरदाता से संपर्क स्थापित करता है। साक्षात्कार करते समय आवश्यकतानुसार सुचनाओं का आलेखन भी किया जाता है।

**समूह चर्चा :** इस प्रकार के साक्षात्कार में एक या एक से अधिक उत्तरदाओं से सूचना एकत्र करने का प्रयास किया जाता है।

**शोध क्षेत्र :**

बस्तर, भारत के छत्तीसगढ़ प्रदेश के दक्षिण दिशा में स्थित जिला है। बस्तर जिले एवं बस्तर संभाग का मुख्यालय जगदलपुर शहर है। इसका क्षेत्रफल 4029.98 वर्ग कि. मी. है। बस्तर जिला छत्तीसगढ़ प्रदेश के कोंडागांव, सुकमा, बीजापुर जिलों से घिरा हुआ है। बस्तर जिले की जनसंख्या वर्ष 2011 में 1,411,644, वर्तमान कोंडागांव जिले को सम्मिलित करते हुए थी। जिसमें 697,359 पुरूष एवं 714,285 महिलांए थी। बस्तर की जनसंख्या में 70 प्रतिशत जनजातिय समुदाय जैसे– गोंड, मारिया, मुरिया, भतरा, हल्बा, धुरवा समुदाय निवास करते है । बस्तर जिला को सात विकासखण्ड/ तहसील– जगदलपुर , बस्तर, बकावण्ड, लोहण्डीगुडा, तोकापाल, दरभा, बास्तानार में विभाजित किया गया है। बस्तर के जनजातीय समुदाय की बडी जनसंख्या आज भी घने जंगलों में निवास करती है। बस्तर के जनजातीय समुदाय अपनी संस्कृति, कला, पर्व ,सहज जीवन शैली के लिए प्रसिद्ध है।[6]

**भतरा जनजाति :**

भतरा जनजाति बस्तर जिले के जगदलपुर बकावण्ड और बस्तर ब्लाक के विभिन्न गावों में निवास करती है। भतरा जनजाति बस्तर की प्रमुख जनजाति है, जो कि तीन प्रकार के पाये जाते है– बडे भतरा , मंजली भतरा और शान भतरा। भतरा जनजाति की अपनी विशेष पंरपरा एवं रीतिरिवाज है, जिसके कारण इनकी अपनी विशेष पहचाान है। यह अंर्तविवाही प्रकृति के होते है तथा एक ही गोत्र में विवाह वर्जित माना जाता है, इनमें ममेरे फुफेरे के बच्चो के बीच में विवाह एवं लमसेना विवाह का प्रचलन है। भतरा जनजाति में मुख्यतः जन्म संस्कार, मृत्यु संस्कार एवं विवाह संस्कार विशेष रूप से किया जाता है।[7]

**जन्म संस्कार :**

भतरा जनजाति में बच्चे का जन्म संस्कार 7 चरणों पूर्ण किया जाता है, जिसका अपना विशेष महत्व होता है। 1.गर्भाधान 2. प्रसव 3. कसा पानी 4. हांडी छुआ 5. छढी कार्यक्रम 6. नामकरण संस्कार 7. मुण्डन संस्कार

भतरा जनजाति में जब स्त्री का मासिक चक्र रूक जाता है तो गर्भधारण का ज्ञान होता है, तो उस स्त्री को देहने आसे कहा जाता है। गर्भधारण के प्रारम्भ, मध्य अर्थात् पूरे गर्भकाल में किसी भी प्रकार का अनुष्ठान नही किया जाता है। गर्भावस्था के दौरान कुछ कार्य जैसे –फटी हुई चीजों को सीलना, दीवार में यदि दरार है तो उसे भरना भी वर्जित होता है। गर्भवती माता को खाने भी निषेध होता है जैसे– सीता फल, कटहल, आलू कांदा आदि का सेवन गर्भावस्थावस्था में वर्जित होता है।

**प्रसव :**

भतरा जनजाति में प्रसव घर पर ही कराया जाता है। प्रसव गांव की प्रशिक्षित दाई (सुईन) के द्वारा कराया जाता है। जिस कमरे में प्रसव कराया जाता है, उस कमरे को मेला बाघरा कहते है। बच्चे के जन्म के पश्चात नल/ नारली अर्थात् नेरवा को नये ब्लेड से काटा जाता है ( पूर्व में धागा से या झिकरा के द्वारा काटा जाता था) तथा मेला बाघरा में ही उसे एक गडडा कर उसमें पाट दिया जाता है उस गडडे को बोमली खोदरा कहा जाता है, तथा उसी जगह पर आग जला कर बच्चे की सफाई के बाद बच्चे की सेकाई की जाती है, जब तक मां की शुद्धि नही होती है तब तक मां तथा बच्चे को उसी मेला बाघरा में निवास करना पडता है।

**कसा पानी :**

प्रसव के तीसरे दिन कसा पानी का आयोजन किया जाता है। इस दिन जंगल से जड़ी–बुटी एकत्रित कर जैसे– ककई कांदा, सिंधी कांदा, बेलपत्ता, हिरवां आदि को गुड के

साथ उबालने के पश्चात् लहसुन और जाडा तेल या डालडा के साथ बघार कर बनाया जाता है।

फिर मेला बाघरा में पुजहारिन (यह समाज की कोई भी बुजुर्ग महिला होती है जिसके द्वारा पुजा किया जाता है) के द्वारा धूप दीप जलाकर पुजा किया जाता है इसके पश्चात् कसा पानी और तिल का लड्डू माता को तथा अन्य आमंत्रित किये हुए लोगो को दिया जाता है। कसा पानी करने का मुख्य उददेश्य मां तथा बच्चे के स्वास्थ्य को बेहतर करना होता है क्योंकि कसा पानी जंगली जड़ी–बुटी के द्वारा बनाया जाता है जो माता के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है।

**हांडी छुआ :**

यह विधान माता की शुद्धि के लिए प्रसव के नौवे दिन या जिस दिन बच्चे का नाल झड़ जाता तब किया जाता है। इस विधि को करने के पश्चात् माता की शुद्धि हो जाती है जिसके फलस्वरूप माता घर के कामों को कर सकती है।

इस विधि में पुजाहारिन के द्वारा एक हण्डी में पानी भरकर चांवल के कुछ दाने डाल कर उसे पत्तल से ढंक दिया जाता है और मेला बाघरा में ही रख दिया जाता है। इसके पश्चात् पुजाहारिन के द्वारा माता का हाथ पकडकर उस हण्डी में हाथ को डाला जाता है और माता को चांवल का कुछ दाना निकालने को कहा जाता है। इसके पश्चात् माता शुद्ध होती है तथा घर के कामों को करती है।

**छठी कार्यक्रम :**

छढी कार्यक्रम वैसे तो बच्चे के जन्म के एक महीने के पश्चात् या दो या तीन वर्ष के पश्चात् अपनी यथा शक्ति अनुसार किया जाता है। यह बहुत ही मुख्य संस्कार है जिसमें आंगन में एक धान का छोटा सा ढेर या एक मटके में धान भरकर रखा जाता है तथा उस धान के ढेर के उपर या मटके के बाजु में एक कलश धान भरकर उसके उपर दीप जलाया जाता है, फिर पूर्व दिशा में मुंह करके माता तथा बच्चे को बिठाया जाता है फिर समाज के सगा संबंधी माता और बच्चे को घेरा बनाकर बैठ जाते है, बच्चे के पिता के द्वारा एक चोखनी में दूध दुर्वा व चांवल लेकर बच्चे के पैर को धुला कर चांवल का टीका कर बच्चे को नेंग दिया जाता है इसके पश्चात् समाज के सभी सदस्यों को मां व बच्चे को चांवल का टीका कर उपहार दिया जाता है। धान के ढेर को बच्चे की बुआ 10–20 रूपये देकर ले जाती है।

**नामकरण संस्कार :**

बच्चे का नामकरण भी छठी कार्यक्रम वाले दिन किया जाता है, बच्चे का नामकरण करने के लिए मां तथा बच्चे को घेरा बनाकर बैढे हुए लोगों के द्वारा एक एक पतरी में पके चांवल का छोटे–छोटे सात लडडू बनाकर रखाजाता है , मुर्गा सब्जी का पैर , दाल लेकर मां तथा बच्चे के चारो तरफ गीत गाते हुए सात बार घुमाते है और बच्चे के कान में नाम को बोला जाता है, इसके पश्चात् बच्चे के ममेरे फुफेरे भाई या बहन (मैना भाई/बहन) के द्वारा पतल में निकाले गये सब्जी व चांवल को जमीन में घसीटतें हुए बच्चे का नाम पुकारते हुए मेला बाघरा में रख दिया जाता है। इसके पश्चात् माता को शिवनइन के द्वारा सात दाना चांवल का दिया जाता है जिसे माता बोमली खोदरा में आधा गाढ देती है। इस नियम को करने का उददेश्य बच्चे के दांतो का अच्छा शेप में आने के लिए किया जाता है । नामकरण संस्कार के पूर्ण होने के पश्चात् सगा संबंधियों को भोज कराया जाता है । यह क्रियाविधि शाम को सम्पन्न की जाती है।

नामकरण संस्कार गीतः– आरयासुर आ नांव संगायबु, भारयासुर आ नांवसंगायबु,महिसासुर आ नावंसंगायबु, खुदरी बाली आव नावसंगांयबु,सांटी डोरी आव नांवसंगायबु, चिमकते आव , लाफडते आव नांवसंगायबु, आयार खोले बस, बुआ र खोले बस।

**निष्कर्षः**

बस्तर के भतरा जनजाति में जन्म संस्कार का विशेष महत्व होता है जो कि माता के प्रसव से लेकर छढी कार्यक्रम तक होता है किंतु गर्भावस्था में किसी भी प्रकार का अनुष्ठान या संस्कार नहीं किया जाता है इसी प्रकार बच्चे के जन्म बाल को भी जब तक छठी नहीं किया जाता है तब तक उसे नहीं उतारा जाता है तथा जन्म बाल को समाज के किसी भी बुर्जुग व्यक्ति के द्वारा उतरवाया जाता है और उसे नेंग स्वरूप मंद (एक बोतल देशी शराब) व खाना तथा अपनी इच्छानुसार पैसा दिया जाता है। मुण्डन संस्कार का कोई विशेष महत्व नहीं होता है। विशेषतः छठी कार्यक्रम खर्चीली है जिसके कारण माता–पिता बच्चे के जन्म के दो या तीन वर्ष पश्चात् भी छठी कार्यक्रम करते है तभी बच्चे का नामकरण किया जाता है।

**संदर्भः**

1. http://.vikaspedia.in आदिवासी संस्कृति व परंपरा 14.2.21 2.10

2. http://sarasach.com/urmila-5/ संस्कार, संस्कृति, सभ्यता

3. Sahoo, S., & Panda, B. (2006). A study of nutritional status of pregnant women of some villages in Balasore District, Orissa. ***Journal of Human Ecology, 20(3),*** 227–232. Retrieved from

4. Das, J.K. (1961). ***The Tribes of Orissa, Vol-XII.*** Census of India Publication.

5. प्रेमी जितेन्द्र कुमार (2015). ***मंझवार जनजाति की धार्मिक मान्यताएं एवं क्रियाकलाप*** ए.एण्ड वी. पब्लिकेशन, रायपुर

6. https://hi.wikipedia.org/wiki 21.2.19

7. जगदलपुरी लाला ,(2007) : ***बस्तर इतिहास एवं संस्कृति,*** मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी भोपाल

✦